भारत सरकार

कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय

कृषि एवं किसान कल्याण विभाग

लोक सभा

अतारांकित प्रश्न सं. 1655

10 फरवरी, 2026 को उत्तरार्थ

विषय: आम की खेती

1655. डॉ. आनन्द कुमार गोंड:

क्या कृषि और किसान कल्याण मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे किः

(क) क्या देश में आम की खेती में द्विवार्षिक फसल की समस्या (एक वर्ष में उच्च उपज और अगले वर्ष में कम उपज, जो किसानों की आय और उत्पादन की स्थिरता को प्रभावित करती है) होती है;

(ख) क्या सरकार ने आम की उपज में द्विवार्षिक फलन की प्रवृत्ति, इसके कारणों और क्षेत्रीय प्रभावों के वैज्ञानिक मूल्यांकन के संबंध में कोई अध्ययन किया है और यदि हां, तो इस अध्ययन के मुख्य निष्कर्षों का ब्यौरा क्या है; और

(ग) क्या सरकार संकर/उन्नत आम की किस्मों के विकास और अनुसंधान के संवर्धन, किसानों तक उनका प्रसार, बागवानी प्रबंधन तकनीकों और अन्य वैज्ञानिक उपायों के माध्यम से इस समस्या का समाधान करने के लिए कोई ठोस कदम उठा रही है?

उत्तर

कृषि एवं किसान कल्याण राज्य मंत्री (श्री रामनाथ ठाकुर)

(क) और (ख): पूरा देश आम की खेती की द्विवार्षिक (एकांतर) उपज की समस्या से प्रभावित नहीं है। यह उत्तर भारत के कुछ क्षेत्रों में पाई जाती है और दक्षिण भारत में इसका प्रभाव कम है। आम में द्विवार्षिक उपज होने पर, इसके कारणों और क्षेत्रीय प्रभावों सहित, भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद (आईसीएआर) के संस्थानों जैसे आईसीएआर-भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान (आईएआरआई), नई दिल्ली, आईसीएआर-भारतीय बागवानी अनुसंधान संस्थान (आईआईएचआर), बेंगलुरु और आईसीएआर-केंद्रीय उपोष्णकटिबंधीय बागवानी संस्थान (सीआईएसएच), लखनऊ द्वारा वैज्ञानिक अध्ययन किए गए हैं। अध्ययनों से पता चलता है कि दशहरी, लंगड़ा, चौसा, फजली और अल्फोंसो जैसी किस्में मुख्य रूप से द्विवार्षिक उपज प्रकृति वाली होती हैं। द्विवार्षिक उपज के मुख्य कारण आनुवंशिक कारकों से प्रभावित वंशानुगत शारीरिक लक्षण, नाइट्रोजन और कार्बन भंडार, पुष्प निर्माण का हार्मोनल नियंत्रण, जलवायु कारक, कृषि पद्धतियाँ और फसल भार हैं।

(ग): आईसीएआर ने आम में द्विवार्षिक उपज की समस्या के समाधान हेतु विभिन्न कदम उठाए हैं। इनमें आम की नियमित फल देने वाली किस्मों और संकरों जैसे आम्रपाली, मल्लिका, पूसा अरुणिमा, पूसा लालिमा, पूसा प्रतिभा, पूसा श्रेष्ठा**,** पूसा मनोहरी, अर्का उदय, अर्का सुप्रभात, अवध अभया, सीआईएसएच-अरुणिका, सीआईएसएच-अंबिका, अवध समृद्धि, नीलम, तोतापुरी, बंगनपल्ली और सोनपरी आदि का प्रजनन और संवर्धन शामिल है। इन किस्मों/ संकरों की गुणवत्तापूर्ण पौध सामग्री का वितरण आईसीएआर संस्थानों और पंजीकृत नर्सरियों के माध्यम से किसानों तक किया जाता है। एकीकृत बागवानी विकास मिशन ने रोगमुक्त गुणवत्तापूर्ण पौध सामग्री के उत्पादन हेतु स्वच्छ पौध कार्यक्रम की शुरुआत की है। अन्य उपायों में बेहतर बागवानी प्रबंधन पद्धतियों का विकास और प्रचार-प्रसार शामिल है, जैसे कि कैनॉपी प्रबंधन, उच्च घनत्व रोपण, संतुलित पोषक तत्व और जल प्रबंधन, जलवायु-अनुकूल तकनीक जैसे कि छंटाई के साथ-साथ नियमित पुष्पन को प्रेरित करने के लिए नैनोफ्लोरिन का प्रयोग और अगले मौसम में फल आने में सहायक नई कोंपलों के प्रस्फुटन के लिए मटर के आकार की अवस्था में पैक्लोबुट्राज़ोल का प्रयोग शामिल हैं।

******